Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 7, December-2021, ISSN 2230-7540

प्रचलित जयन्तियों के माध्यम से भारतीय जन मानस के जीवन में रीति एवं संस्कृति का प्रसार एवं विकास

Dr. S. K. Mahto*

Principal, Thakur Durgpal Singh Memorial B.Ed. College, RRBM University, Alwar, Rajasthan

सारांश *- भारत की इस पवित्र धरा पर अनेक संत महात्माओं, राजनेताओं, वैज्ञानिकों एवं समाजसुधारकों ने जन्म लिया है जिनका जीवन, चरित्र अत्यंत उज्जवल, संघर्षपूर्ण, सत्य एवं अहिंसा पर आधारित रहा है। इन महान् विभूतियों ने साधारण से साधारण घर में जन्म लेकर भी कड़ी मेहनत, दृढ़ संकल्प एवं दृढ़निष्ठा से कार्य करते हुए पूरे विश्व में अपनी कीर्ति पताका फहराई है। समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर कर मानव मूल्यों को पुनः स्थापित कर समाज को एक नई दिशा दी है। उनके संघर्षपूर्ण जीवन की अनेक घटनाएँ अत्यंत प्रेरणादायी है। विद्यालयों में देश के इन महापुरूषों की जयंतियाँ मनाई जाती है। इन सभी को मनाने का उद्देश्य एकमात्र यही है कि देश की भावी पीढ़ी संत -महात्माओं, पुरूषों के संदेशों को अपने हृदयगंम कर अपने जीवन को उज्जवल बनाकर उनके संघर्षो से प्रेरणा प्राप्त कर सकें तथा भारतीय रीति एवं संस्कृति से अवगत हो सके। ये जयंतियाँ समाज और व्यक्ति को जीवन्तता प्रदान करते हैं तथा विविधता में एकता का भाव उत्पन्न करते हैं।*

कुंजी शब्द *- भारतीय जयन्तियाॅ एवं उनकी संस्कृति एवं प्रेरणा*

---------------------------------X---------------------------------

भूमिका

भारत की इस पवित्र धरा पर अनेक संत महात्माओं, राजनेताओं, वैज्ञानिकों एवं समाज सुधारकों ने जन्म लिया है जिनका जीवन, चरित्र अत्यंत उज्जवल, संघर्षपूर्ण, सत्य एवं अहिंसा पर आधारित रहा है। इन महान् विभूतियों ने साधारण से साधारण घर में जन्म लेकर भी कड़ी मेहनत, दृढ़ संकल्प एवं दृढ़निष्ठा से कार्य करते हुए पूरे विश्व में अपनी कीर्ति पताका फहराई है। समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर कर मानव मूल्यों को पुनः स्थापित कर समाज को एक नई दिशा दी है। उनके संघर्षपूर्ण जीवन की अनेक घटनाएँ अत्यंत प्रेरणादायी है। विद्यालयों में देश के इन महापुरूषों की जयंतियाँ मनाई जाती है। इन सभी को मनाने का उद्देश्य एकमात्र यही है कि देश की भावी पीढ़ी संत -महात्माओं, पुरूषों के संदेशों को अपने हृदयगंम कर अपने जीवन को उज्जवल बनाकर उनके संघर्षो से प्रेरणा प्राप्त कर सकें तथा भारतीय रीति एवं संस्कृति से अवगत हो सके। ये जयंतियाँ समाज और व्यक्ति को जीवन्तता प्रदान करते हैं तथा विविधता में एकता का भाव उत्पन्न करते हैं। विद्यालयों में राष्ट्रीय पर्व और जयंतियो का आयोजन किया जाता है, उनके पीछे दृष्टि यही है कि समस्त विद्यार्थी समुदाय राष्ट्रीय पर्व एवं जयंतियो के माध्यम से भारतीय सभ्यता, रीति एवं संस्कृति को समझकर देश की भावनात्मक एवं राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाने में अपनी सकरात्मक भूमिका का निर्वहन कर सकें। निम्नलिखित जयन्तियों को हम विद्यालयों में मनाते है-

स्वामी विवेकानन्द जयंती

स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी, 1863 को प्रातः कोलकाता में हुआ। उनके पिता का नाम विश्वनाथ एवं माता का नाम भुवनेश्वरी देवी था। श्री रामकृष्ण उनके गुरू थे। एक दिन गुरू ने उनके सिर पर हाथ रखकर भरे गले से कहा “तुम भारत के रत्न हो, मै तुम्हारे लिए गली-गली में भीख भी माँग सकता हूँ।” नरेन्द्र गुरूजी का स्नेह देखकर गदगद् हो गये।

अपने गुरू का ऐसा असीम स्नेह देखकर एक क्षण को नरेन्द्र भी व्याकुल हो उठे। उन्हें लगा कि वे रो पड़ेंगे लेकिन उन्होंने अपने आपको सयमित किया। गुरूजी ने अपने शेष शिष्यों की जिम्मेदारी भी नरेन्द्र के कंधो पर डाली। गुरू के महासमाधि लेने के बाद नरेन्द्र ने सन्यास धारण किया और अब वे स्वामी विवेकानन्द बन गये। मानव मात्र की सेवा करना ही उनके जीवन का मुख्य लक्ष्य था। उन्होंने सम्पूर्ण देश का भ्रमण कर अपने गुरूजी के आदर्शों और सिद्धान्तो का प्रचार किया।

www.ignited.in

शिकागो मे हुए धर्म सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व कर अपनी अमिट छाप अंकित की। सम्पूर्ण विश्व में स्वामी विवेकानन्द की महानता, विद्‌वता, तेजस्विता, अद्‌वितीयता का यशोगान होने लगा। अनेक विदेशी युवक-युवतियाँ उनके शिष्य बन गये। इस युवा सन्यासी ने अनेक देशी विदेशी युवाओं के मन में अपने सन्देशों व आदर्शों से हलचल उत्पन्न कर दी। उनका मानना था कि चरित्रवान, स्वस्थ एवं कर्मनिष्ठ युवा ही किसी देश की शक्ति है। आत्मविष्वासी दृढ़संकल्पवान युवा शक्ति ही अपने देश का कायाकल्प कर सकती है।

गाँधी जयन्ती

सत्य और अहिंसा के पुजारी राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 में पोरबन्दर (काठियावाड़, गुजरात) में हुआ था। गाँधी जी के पिता करमचन्द गाँधी राजकोट राज्य के दीवान थे। उनकी माता पुतलीबाई एक धर्मनिष्ठ महिला थी। प्रारम्भिक शिक्षा के पश्चात् इन्हें कानून के अध्ययन हेतु 1888 में इंग्लैण्ड भेजा गया। इस समय इन्होने अपनी माता के समक्ष मद्‌यपान न करने, मांसाहार न करने एवं परस्त्री गमन नहीं करने की प्रतिज्ञा ली, जिसका उन्होंने पूर्णस्वरूप से पालन भी किया। उन्होंने कहा “जो मनुष्य अपमान सहन करता है वह मानवता के विरूद्ध कार्य करता है। प्रत्येक प्राणी का कर्तव्य है कि वह अपने आत्मसम्मान की रक्षा करे।” दक्षिण अफ्रीका की सरकार को झुकना पड़ा और गाँधीजी के सिद्धांतो की जीत हुई। 1896 में वे भारत लौट आये। यहाँ आकर उन्होंने अँग्रेजों के विरूद्ध मोर्चा संभाला। गाँधीजी की कथनी और करनी में एकरूपता थी। वे जो बात दूसरों के लिए कहते थे, उसे सर्वप्रथम अपने ऊपर लागू करते थे। उनके आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक विचार आज के उपभोक्तावादी, तनावग्रस्त एवं अशान्त दुनिया को उज्जवल भविष्य की ओर ले जाने में कारगर है, प्रासंगिक है।

लाल बहादुर शास्त्री जयंती

जिस झण्डे के नीचे हम और आप खड़े है और बैठे है, आज इसकी रक्षा और हिफाजत का सवाल है। इसकी शान बनाये रखना है, इसे कायम रखना है। हम और आप रहे या न रहें, लेकिन भारत का सिर ऊँचा होगा। भारत दुनिया के देशों में एक बड़ा देश होगा और शायद भारत दुनिया को कुछ दे सके। लाल किले की प्राचीर से राष्ट्र को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा था “एक सबक जो हम सबको सीखना है, वह यह है कि आजादी की रक्षा के लिए हमारे देश की अपनी शक्ति बढ़नी चाहिए और हमें जितना भी हो सके, अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए।” 12 जनवरी, 1966 को सादगी व सरलता की यह मूर्ति ताशकन्द में हमेशा के लिए अनन्त में विलीन हो गई। वहाँ वे शान्ति प्रयासों के एक बड़े मिशन के सिलसिले में गये थे।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयंती

भीमराव अम्बेडकर का जन्म महाराष्ट्र जिले के एक छोटे से गांव अम्बावाड़े में 14 अप्रैल 1891 को हुआ। उनकी माता का नाम भीमाबाई तथा पिता का नाम रामजी मालोजी था। 1912 में बी.ए. उतीर्ण करने के पश्चात् 1913 में इन्होने बड़ौदा रियासत के स्टेट फोर्स में लेफ्टिनेंट के पद पर अपनी सेवाएँ देनी प्रारम्भ कर दी, किन्तु दुर्भाग्य ने यहा भी इनकी खुशी में विघ्न डाला। एक माह पश्चात् दो फरवरी को इनके पिता परलोकवासी हो गये। दुःखी, परेशान भीम मुम्बई लौट आये। कुछ समय उपरान्त बडौदा के महाराज ने चार मेधावी विद्‌यार्थियों के अमेरिका में उच्च अध्ययन हेतु विज्ञप्ति निकाली। भीम ने इस स्वर्णिम अवसर हेतु आवेदन पत्र भेजा। इनका चयन भी हो गया। ये अध्ययन हेतु अमेरिका प्रस्थान कर गये। अछूतों और दलितों के प्रति उनके हृदय में गहरी पीड़ा थी। उन्होंने जिन कठिनाइयों एवं समस्याओं को अपने जीवन में महसूस किया, वे उनसे दलित एवं अछूतो को उबार कर समाज में आर्थिक, समाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक सभी क्षेत्रों में महानता दिलाना चाहते थे। इनका जीवन बिल्कुल सादगी पूर्ण था। इनके जीवन में आडम्बर का कोई स्थान नहीं था। ये पूर्णतः कर्मठ, अध्यवसायी एवं एक सच्चे देशभक्त थे। देश के स्वतंत्र होने पर 29 अगस्त, 1947 को भारतीय संविधान का मसविदा बनाने के लिए एक समिति गठित की गई। बाबा साहेब इसके अध्यक्ष चुने गये। संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने डॉ. भीमराव के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा “डॉ. अम्बेडकर को मसविदा समिति में शामिल कर और उसका अध्यक्ष चुनकर हमने जो कार्य किया उससे बढ़कर हम दूसरा अच्छा कार्य नहीं कर सकते।”

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस जयंती

तुम मुझे खून दो, मै तुम्हें आजादी दूँगा “इस नारे से देश के वीर नौजवानों का देश की आजादी के लिये आह्‌यान करने वाले सुभाषचन्द्र बोस का जन्म उड़ीसा के कटक नगर में 23 जनवरी 1887 को हुआ था। बाल्यावस्था से ही उन्हें अध्ययन का बड़ा शौक था। अपने बहन भाइयों को पाठशाला जाते देखते तो उनका मन भी स्कूल जाने के लिए मचला। सन् 1911 तक नेताजी, राजनीतिक दृष्टि से उभरकर देश के सामने नहीं आये थे। सन् 1920 में वे आई.सी. एस. बने और 1921 में देशहित में स्वतंत्र रूप से कार्य करने हेतु इस पद से इस्तीफा दे दिया। सन् 1921 में वे राजनीति से सक्रिय रूप से जुड़ गये। सन् 1938 में

उन्हें काँग्रेस का अध्यक्ष चुना गया। 4 फरवरी, 1944 को मातृभूमि की स्वतंत्रता हेतु आजाद हिन्द सेना ने प्रस्थान किया। सेना कोहिमा पहुँच गई। सैनिको ने मातृभूमि को जमीन पर लेट कर प्रणाम किया। जब विश्व युद्ध में जापान ने हथियार डाल दिये तो सुभाष बाबू रंगून से बैंकाक चले गये। ऐसा माना जाता है कि उनका वायुयान दुर्घटनाग्रस्त हो गया जब यह समाचार देशवासियों ने सुना तो सम्पूर्ण देश शोक सागर में डूब गया। देश की आजादी के लिए उन्होंने जा अनवरत अथक संघर्ष किया, अपने जीवन की कुर्बानी दी, उसके लिए हम भारतवासी सदैव उनके ऋणी रहेंगे।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जयंती

‘स्वतंत्रता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं इसे प्राप्त करके रहूँगा “यह उद्घोषणा कर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जान फूँकने वाले बाल गंगाधर तिलक को कौन नहीं जानता?” वे एक महान् देशभक्त और उग्र राजनीतिक विचारक थे। अपने देश प्रेम और अथक प्रयत्नों के परिणामस्वरूप ही तिलक ‘लोकमान्य’ कहलाने लगे। सर्वप्रथम गाँधी जी ने उन्हे लोकमान्य कहकर पुकारा। उन्होंने तीन पुस्तकें लिखी, जिन्हें सरकार के शिक्षा विभाग ने विद्यालयों में पढ़ाने हेतु स्वीकार कर लिया। उन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों, कुप्रथाओं की खिलाफत स्वयं अपने घर से की। सन् 1879 में एलएल.बी. की परीक्षा पास की। स्वास्थ्य ठीक नहीं होने के कारण एम.ए. की परीक्षा में दो बार असफल रहे। इस समय उन्होंने स्वास्थ्य की तरफ ध्यान दिया। उन्होंने जिमनास्टिक करना प्रारम्भ कर दिया। उन्हें तैरने और नाव चलाने का भी बहुत शौक था। अध्यापन कार्य करते हुए उन्होंने दो मराठी पत्र ‘केसरी’ और ‘मरहट्ठा’ निकालना प्रारम्भ किया। दोने अखबारों के माध्यम से उन्होंने लोगों में राजनैतिक चेतना जगाने का कार्य किया। 1889 में तिलक काँग्रेस में शामिल हुए। उन्होंने इसकी उदारवादी नीति का तीव्र विरोध किया। 1891 में तिलक ने सरकार के ‘सहवास वय विधेयक’ का इस आधार पर विरोध किया कि विदेशी सरकार को जनता पर सामाजिक सुधार थोपने का कोई अधिकार नहीं है। राष्ट्रीय जागृति और मनोबल में वृद्धि करने के उद्देश्य से तिलक ने गोवध विरोध समितियों, अखाड़ों और लाठी क्लबों की स्थापना की।

रामदेव जयंती

इस धरा पर जितने भी संत महापुरूष हुए हैं, सभी ने एक ही संदेश दिया है, मानवता का। प्रेम, भाईचारे, शान्ति और अंहिसा का। इन संत महात्माओं में एक और नाम आता है बाबा रामदेव का। हिन्दू और मुसलमानों दोनो के प्रिय बाबा रामदेव का जन्म पश्चिमी राजस्थान के उण्डूका समीर में संवत् 1452, भादों शुक्ल द्वितीया को हुआ था। रामदेव बचपन से ही असाधारण थे। जब ये किशोर थे तो इन्होने अनुभव किया कि गाँव का महाजन लोगो का शोषण कर उन्हें बहुत सताता है। एक दिन उन्होंने उसकी बहियाँ गुरूजी के हवन कुण्ड में जला दी और उसकी गर्दन पकड़कर उसे बहुत दुत्कारा। महाजन उनके पैरों में पड़कर माफी माँगने लगा। तब उन्होंने उसे गाँव छोड़कर जाने की शर्त पर माफ कर दिया। तभी से बाबा की जय जयकार होने लगी। बाबा रामदेव हिन्दू मुसलिम एकता के पर्याय है। दीन दुखियों के लिए भगवान् स्वरूप है।

मीरा बाई जयंती

भारतवर्ष में समय समय पर अनेक संत महात्मा ऐसे हुए है, जिन्होने इस संसार को निस्सार मानकर अपना सम्पूर्ण जीवन ईश भक्ति में गुजार दिया। इस दृष्टि से महिलाओं में भक्त शिरोमणि मीरा बाई का नाम अग्रणी है।

मीरा को कृष्ण भक्ति की ओर प्रेरित करने में एक घटना का उल्लेख मिलता है। जब वे 5 वर्ष की थी, तब एक दिन उनके घर के नीचे से एक बारात जा रही थी। दूल्हे को देखकर उन्होंने अपनी माँ से पूछा “मेरा दूल्हा कौन है?” उनके बाल सुलभ भोलेपन पर हंसते हुए माता ने श्रीकृष्ण की मूर्ति की ओर संकेत करते हुए कहा कि “तुम्हारा दूल्हा गिरधर गोपाल है।” तभी से मीरा का कृष्ण के प्रति अनुराग उत्पन्न हो गया। वह दिन रात कृष्ण के चिन्तन मनन में लीन रहने लगी। यद्यपि उनका विवाह महाराणा सांगा के पुत्र भोजराज से हुआ था किन्तु उनके मन में मुरली मनोहर की मनमोहक छवि बसी थी। गिरधर गोपाल को ही वह सच्चा प्रियतम मानती थी। वह गाती थी “मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।”

अमृता बाई जयंती

पर्यावरण संरक्षण की जब हम बात करते है तो अमृता बाई को याद किये बगैर चर्चा समाप्त नहीं हो सकती। अब आपके मन में प्रश्न उठ रहा होगा कि अमृता बाई ने पर्यावरण सुरक्षा के लिए ऐसा क्या कार्य किया था? हाँ बात कुछ ऐसी ही है। अमृता ने पर्यावरण के क्षेत्र में एक अभूतपूर्व कार्य किया था। यह बात सन् 1737 की है। जोधपुर रियासत के अधिकारी खेजड़ली गाँव आये, आते ही उन्होंने पेड़ काटने का हुक्म दिया। उनको भी पेड़ पौधो से अन्नय प्रेम था। उन्हें गुरूजी का उपदेश भली भॉति स्मरण था। राजा के अधिकारियों का फरमान सुनकर वो क्रोधित हो गई; वह और उनकी बेटियाँ पेड़ से लिपट गई। उनके पीछे पीछे अन्य साथी भी आ गई। सिपाहियों ने उनकी गर्दने कांट दी। इस घटना के बाद राजा ने क्षमा याचना की और भविष्य मे वृक्ष न काटने की प्रतिज्ञा ली। ऐसी थी वृक्षप्रेमी अमृता, जिनकी शहादत सभी मनुष्यों के लिए प्रेरणादायी है।

उनका बलिदान सदैव पर्यावरण संरक्षण का संदेश देता रहेगा। वे मरकर भी अमर है।

गुरूनानक जयंती

गुरूनानक का जन्म सन् 1469 में कार्तिक पूर्णिमा के दिन पंजाब राज्य के शेखपुरा जिले के तलवण्डी गांव मे माना जाता है। यह स्थान ननकाना साहिब के नाम से प्रसिद्ध हुआ। अब यह स्थान पाकिस्तान में है। उनका प्रारम्भ से ही सांसारिक ज्ञान की अपेक्षा आध्यात्म ज्ञान की ओर रूझान था। नानक तो साधु संन्यासियों की संगत में रहते। उन्होंने 18 वर्ष, रावी के किनारे करतारपुरा में गुजारे। यहाँ उन्होंने एक गृहस्थ के रूप में मार्गदर्शक का जीवन व्यतीत किया। इस समय उन्होंने दो मुख्य कार्य किये। एक तो लंगर लगाना। यह उनकी समानता, नम्रता और भातृत्व भाव का प्रतीक था। इसमें बिना किसी जाति पांति, अमीर गरीब के भेद के सब साथ बैठकर भोजन करते है। उनका दूसरा कार्य सेवा था। सेवा में, संगत में, विभिन्न प्रकार के कार्य यथ बर्तन साफ करना, आटा पीसना, भोजन बनाना, पानी लाना आदि किये जाते थे। अंत समय में उन्होंने लहना को अंगद के नाम से अपना उतराधिकारी नियुक्त किया। 7 सितम्बर, 1539 के दिन उन्होंने अपने नश्वर शरीर को त्याग दिया, लेकिन अपनी कहानी, उपदेशों से जनता को मालामाल कर गये।

महावीर स्वामी जयंती

महावीर स्वामी का जन्म 599 ई0 पूर्व ग्रीष्म ऋतु के चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी को मध्यरात्रि में वैशाली के निकट क्षत्रिय कुण्ड ग्राम में एक सम्पन्न एवं प्रतिष्ठित परिवार में हुआ। उनकी माता का नाम त्रिशाला एवं पिता का नाम सिद्धार्थ था। उनके पिता सिद्धार्थ, ज्ञात्रिक गणराज्य के प्रमुख थे। उनकी माता वैशाली के राजा चेटक की बहन थी। ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् महावीर स्वामी ने समस्त देश का भ्रमण कर अपने ज्ञान एवं सिद्धांतो का प्रचार किया। महावीर स्वामी की गिनती विश्व के महान धर्म सुधारकों में होती है। उन्होंने पशु वध का विरोध करते हुए कहा “जो पशुओं की निर्मम हत्या का उपदेश देता है वह धर्म नहीं कुधर्म है। वह मनुष्य नहीं राक्षस है, वह शास्त्र नहीं कुशास्त्र है।” उन्होंने “जियों और जीने दो” के सिद्धांत का सम्पूर्ण विश्व में प्रचार किया। उनके शाश्वत संदेश का महत्व आज भी हजारों वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी कम नहीं हुआ है।

तुलसीदास जयंती

आज से लगभग चार सौ वर्ष पहले उतरप्रदेश के एटा जिले के सोरो गाँव में श्रावण शुक्ला पंचमी को पण्डित आत्माराव दुबे के घर एक बालक ने जन्म लिया। बालक को जन्म देने के कुछ ही घण्टों बाद उसकी माता हुलसी का अंतकाल हो गया। पण्डित जी यह सोचकर कांप उठे कि यह पुत्र कुल दीपक है या कुल नाशक। बारह माह माता के गर्भ में रहने के बाद जन्म लेते ही रोने की बजाय उनके मुँह से राम शब्द निकला। इसी से इनका नाम रामबोला पड़ गया। रामबोला को आचार्य को सौंपते हुए स्वामी जी ने कहा “इस बालक को अपने आश्रम में रखिये। यह बालक बड़ा विनीत और तीव्र स्मरण शक्ति वाला है। “एक दिन आचार्य ने उससे कहा कि” वत्स तुम्हारी शिक्षा पूर्ण हो चुकी है। अब तुम ज्ञान का प्रचार करो। रामबोला अपनी जन्मभूमि लौट आया। वहाँ वह नित्य रामकथा करने लगा। कथा सुनने हेतु लोगों की भीड़ बढ़ने लगी। उसकी विद्वता से प्रभावित होकर दीनबंधु पाठक ने अपनी रूपवती, गुणवती एवं शीलवती पुत्री रत्नावली का विवाह रामबोला से कर दिया।

रत्नावली के प्रति रामबोला का मोह इतना प्रबल था कि रामबोला उसे मायके नहीं जाने देते थे। एक दिन की बात है, रामबोला के बाजार जाने पर वह अपने भाई के साथ मायके चली गई। रामबोला रात को ही अपने ससुराल चल दिये। उन्होंने गंगा नदी तैर कर पार की और आधी रात को ही भीगे कपड़ों से मकान के एक तरफ की दीवार पर चढ़कर आँगन में कूद पड़े। धम्म की आवाज से घर के सभी परिजनों की आँखे खुल गई। रामबोला को देखकर रत्नावली की दोने भौजाईयाँ हँसने लगी। पत्नी ने उन्हें डॉट लगाई और बोली आपको मेरे पीछे आने में लज्जा नहीं आई। ऐसे प्रेम को धिक्कार है। इस हाड़-मास के शरीर से जितना प्रेम है, उससे आधा भगवान के प्रति होता तो संसार से छुटकारा पा जाते। पत्नी की ऐसी ज्ञानयुक्त फटकार सुनकर उनके मन से अंधकार के बादल हटने लगे। वे उसी क्षण वहाँ से निकलकर प्रयाग पहुँचे और रामबोला गृहस्थाश्रम छोड़कर संन्यासी बन गये। अब वे रामबोला से तुलसीदास बन गये थे। उनके मन के मन में अब केवल राम थे। सब जगह उनकी रामकथा की धूम मच गई। उनकी ख्याति फैलने लगी। उन्हें स्वप्न में अपने गुरू दिखाई देते जो उन्हें घर घर रामकथा को पहुँचाने एवं अलख जगाने की बात कहते।

गुरू गोविन्द सिंह जयंती

आज से लगभग चार सौ वर्ष पूर्व एक विख्यात संत हुए जिनका नाम था गुरू गोविंद सिंह। इनका जन्म पटना में पौष सुदी सप्तमी, संवत् 1723 विक्रमी के दिन शनिवार को आधी रात के समय हुआ। उन्हें बचपन में गोविंद राय के नाम से जाना जाता था। 9 वर्ष की अल्पायु में इनके जीवन में उस समय दुःखद मोड़ आया जब इनके पिता धर्म की वेदी पर बलिदान हो गये। उस समय ओरंगजेब का शासन था। वह हिन्दुओं को बहुत सताया

करता था। औरंगजेब ने उनसे कहा कि यदि आप मुसलमान हो जायें तो मै आपका शिष्यत्व ग्रहण कर लूँगा। गुरू साहब ने हंस कर कहा “आप मुझे लालच देते हो, मै उस अकाल पुरूष की आज्ञा में हूँ।” “इससे क्रोधित होकर औरंगजेब ने गुरू साहब के साथ आये उनके शिष्य दयालदास को खौलते तेल की कढ़ाही में डाल दिया। कुछ समय बाद गुरूजी को बुलाकर उसने उनका सिर काटने की धमकी दी। इस पर गुरूजी ने उससे कहा” तू किस बात का गर्व करता है। यह शरीर आज तक न किसी का रहा है और न रहेगा। तेरे जैसे न जाने कितने आये और चले गये। यह आत्मा अमर है। इसका तू कुछ नहीं बिगाड़ सकता। और फिर औरंगजेब ने दिल्ली में चांदनी चौक के बीचों बीच लोगों के सामने गुरू तेग बहादुर का सिर कटवा दिया। उन्होंने धूम्रपान एवं नशीली वस्तुओं के सेवन का निषेध कर दिया। उन्होंने कहा “मेरे बाद सिक्खों का कोई गुरू नहीं होगा। गुरू ग्रंथ साहिब धार्मिक पदों का संकलन ही सिक्खों का आध्यात्मिक मार्ग प्रशस्त करेगा। अब सिक्ख संगत ने गुरू गोविंद सिंह का जन्म प्रतिवर्ष पाँच जनवरी को मनाने का निश्चय किया है।”

महाराणा प्रताप जयंती

उपलब्ध तथ्यों के आधार पर महाराणा उदय सिंह की पत्नी जैवंती बाई ने ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया को विक्रमी संवत् 1602 को मेवाड़ में एक पुत्र रत्न को जन्म दिया। इस शूरवीर, देश की आन पर मर मिटने वाले देशभक्त पुत्र से कौन परिचित नहीं है। अपनी मातृभूमि को स्वतंत्र करने हेतु इन्होने क्या-क्या नहीं सहा था, इनको जंगलो में भटकना पड़ा, घास की रोटियां तक खानी पड़ी। मेवाड की रक्षा हेतु मुग्लो से युद्ध किया। युद्ध के प्रारम्भ से ऐसा लग रहा था कि प्रताप की सेना अपने तीव्र हमलों से मुगल सेना में भगदड़ पैदा करके पराजित कर देगी, किन्तु सफलता मिलते मिलते रह गई। मुगल आक्रमणों के कारण राणा प्रताप को सपरिवार राजमहलों को छोड़कर अरावली की पहाड़ियों में जिन्दगी जीनी पड़ी। महाराणा प्रताप का प्रेरणास्पद व्यक्तित्व स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों के लिए हमेशा प्रेरणा का स्त्रोत रहा तथा भारत की भावी पीढ़ी को प्रेरित करता रहेगा। उनके श्रेष्ठ आदर्श, नीतियाँ, उज्जवल चरित्र एवं उच्च नैतिकता इत्यादि महान गुणों को अपने जीवन में उतारकर भारत के भावी नागरिक भारत की आजादी को अक्षुण्ण रखेंगे।

दयानन्द सरस्वती जयंती

स्वामी दयानन्द का जन्म गुजरात के सौराष्ट्र कठियावाड़ के टंकारा गाँव में सन् 1824 ई0 में ब्राहमण परिवार मे हुआ। इनकी माता का नाम अमृता बेन तथा पिता का नाम श्रीकृष्ण था। इनके पिता गाँव के बड़े जमींदार थे। शिक्षा हेतु वे अनेक योगियों के पास गये, किन्तु उन्हे पूर्ण संतुष्टि नहीं मिली। अंत में वे स्वामी बिरजानन्द के पास पहुंचे। स्वामी जी जन्मान्ध थे, किन्तु उनके ज्ञान चक्षु बड़े तीव्र थे। वेदों का उन्हे पूर्ण ज्ञान था। तीन वर्ष उनके पास अध्ययन किया। शिक्षा समाप्ति के बाद परम्परानुसार दयानन्द, गुरू दक्षिणा में कुछ लोग लेकर आये। गुरूजी ने कहा, “तुम संयासी हो, तुमसे दक्षिणा में तुम्हारा जीवन चाहता हूँ। तुम प्रतिज्ञा करो कि जितने दिन जीवित रहोगे, वैदिक धर्म की स्थापना में अपना जीवन अर्पण कर दोगे।” महर्षि तथास्तु कहकर गुरूजी के चरण कमलों में नत मस्तक हो गय इसके पश्चात दयानन्द जी की समाज सुधार यात्रा प्रारम्भ होती है। स्वामीजी के भाषणों से प्रभावित होकर सभी धर्म एवं सम्प्रदाय के व्यक्ति उनके शिष्य बन गये। कई उजड़ और गुण्डे भी उनके सद्‌व्यवहार से उनके भक्त बन गये। सन् 1883 में महर्षि के सेवक रसोइया ने उनको जोधपुर में दूध में कवि पीसकर तीव्र जहर दे दिया। जब उन्हे इस बात का पता चला तो उन्होंने रसोइये से कहा कि अब तुम यहाँ से भाग जाओ, अन्यथा मेरे शिष्यों को पता चलेगा तो वे तुम्हें मार डालेंगे। ऐसे थे मानवता के सच्चे उपासक, नाम-विनम्र, क्षमाशिल दयानन्द, जिन्होने प्राण हरने वालों के प्राणों की भी रक्षा की। ऐसे महान पुरूष इस पृथ्वी पर यदा कदा ही अवतरित होते है। यह आलौकिक सितारा जिसने समाज को एक नई राह, नई दिशा, नई रोशनी दी, वह दीपावली के दिन हमेशा के लिए पंचतत्व में विलीन हो गया।

रवीन्द्रनाथ टैगोर जयंती

‘गीतांजली’ जैसे अमर काव्य के प्रणेता गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म 7 मई, 1861 ई0 में कलकता के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ। रवीन्द्र की दीक्षा शिक्षा परिवार की परम्परानुकूल घर पर ही प्रारम्भ हुई। वे कुशाग्र बुद्धि के बालक थे, अतः शीघ्र ही संस्कृत, अँग्रेजी, इतिहास, विज्ञान, संगीत, चित्रकला आदि विषयों में पारंगत हो गये।

गुरूदेव जीवन भर गीतों की रचना करते रहे। सत्रह वर्ष की आयु में उन्हे बैरिस्टर बनने के लिए इंग्लैण्ड भेज दिया गया। वहां उन्होंने अंग्रेजो की शासन प्रणाली की कटु आलोचना की जिससे उनके प्रोफेसर उनकी चिंतनधारा से बहुत प्रभावित हुए। विलायत से लौटकर उन्होंने सामाजिक रूढ़ियो के विरूद्ध रचनाएँ लिखी। रवीन्द्र केवल साहित्यकार, कलाकार शांति, संगीतज्ञ ही नहीं थे, अपितु वे एक विचारक एवं समाज सुधारक भी थे। उन्होंने शांति निकेतन में विद्‌यालय बनवाया। शैक्षणिक, समाजिक एवं राजनीतिक क्रियाकलापों में भाग लेने के बावजूद उनकी साहित्यिक सेवा एवं लेखनी बराबर चलती रही। ‘गीताजंली’ एवं राष्ट्रीय गीत‘ जन-गण-मन‘ की रचना उन्ही दिनों हुई। ‘गीताजंली’ का विदेशी पाठकों पर भी गहरा प्रभाव पड़ा। इस अमूल्य कृति पर कवि को संसार का सर्वश्रेष्ठ

पुरस्कार 'नोबल पुरस्कार' प्राप्त हुआ। जिसकी पूरी रकम कवि ने शांति निकेतन के कार्यो में लगा दी। 7 अगस्त, 1941 की पूर्णिमा के दिन इस महान कर्मयोगी ने अपनी आँखे मूँद ली।

कालिदास जयंती

कालिदास के जीवन चरित्र के विषय में कुछ भी प्रमाणिक सामाग्री प्राप्त नहीं हो सकी। एक कथा के अनुसार वे विक्रम संवत के संस्थापक राजा विक्रमादित्य के नवरत्नों में से थे। एक अन्य कथा के अनुसार वे राजा भोज के आश्रित कवि हुआ करते थे। एक अन्य कथानुसार उनका संबंध लंका के राजा कुमारदास 500 ई0 से बताया जाता है। जनश्रुति के अनुसार कालिदास प्रारम्भ में महामूर्ख थे। उनका विवाह एक विदुशी युवती से हुआ। किन्तु विवाह के पश्चात् जब कालिदास की मूर्खता का पता चला तो उसने उसे अपशब्द कहे। कालिदास अपमानित होकर घर छोड़कर निकल गये। काशी में उन्होंने संस्कृत साहित्य और व्याकरण का गहन अध्ययन किया, जिससे कुछ समय बाद वे संस्कृत के महान विद्वान बन गये। देववाणी, संस्कृत में उनकी कवित्व शक्ति निखर उठी। घर आकर उन्होंने पत्नी से कहा – "अनावृत कपाट द्वार देही। "अर्थात् दरवाजे के बंद किवाड़ खोल दो। इस पर पत्नी विद्योतमा ने उतर दिया अस्ति कश्चिद् वाग्विशेषः।" अर्थात् तुम्हारी वाणी में कैसे विशेषता आ गई। विद्योतमा को कालिदास के इस तरह संस्कृत में वार्तालाप करने से सुखद आश्चर्य हुआ। कहते है कि कालिदास ने अपनी पत्नी के तीन शब्दों से तीन काव्य रच डाले। अस्ति से कुमार संभव, अस्त्युत रस्यां दिशि, कश्चिद् से मेघदूत, कश्चित्कान्ताविरह गुरूणा एवं वाग् से रघुवंश, वागर्थाविव सम्पृक्तौ। कालिदास ने लगभग इक्तालीस रचनाओं की रचना की किन्तु सात रचनाएँ ही वास्तविक मानी जाती है।

निष्कर्ष

इन सभी को मनाने का उद्देश्य एकमात्र यही है कि देश की भावी पीढ़ी संत-महात्माओं, पुरूषों के संदेशों को अपने हृदयगंम कर अपने जीवन को उज्जवल बनाकर उनके संघर्षो से प्रेरणा प्राप्त कर सकें तथा भारतीय रीति एवं संस्कृति से अवगत हो सके। ये जयंतियाँ समाज और व्यक्ति को जीवन्तता प्रदान करते हैं तथा विविधता में एकता का भाव उत्पन्न करते हैं। इस पवित्र धरा पर अनेक संत महात्माओं, राजनेताओं, वैज्ञानिकों एवं समाजसुधारकों ने जन्म लिया है जिनका जीवन, चरित्र अत्यंत उज्जवल, संघर्षपूर्ण, सत्य एवं अहिंसा पर आधारित रहा है। इन महान् विभूतियों ने साधारण से साधारण घर में जन्म लेकर भी कड़ी मेहनत, दृढ़ संकल्प एवं दृढ़निष्ठा से कार्य करते हुए पूरे विश्व में अपनी कीर्ति पताका फहराई है। समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर कर मानव मूल्यों को पुनः स्थापित कर समाज को एक नई दिशा दी है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:-

1 चौधरी सुनीता – राष्ट्रीय उत्सव एवं जयन्तियॉ, अनुप्रकाशन जयपुर, 2005

2 नेगी, सुरेन्द्रसिंह – "नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता, आदित्य पब्लिशर्स मध्यप्रदेश 2000

3 श्री शरण – "अभिनव नैतिक शिक्षा", आधुनिक प्रकाशन दिल्ली 1997

4 त्यागी गुरूशरण - उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, विनोद पुस्तक, मंदिर, आगरा 2008

5 सिंह, रामजी - भारतीय चिन्तन और संस्कृति, मानक पब्लिकेशन्स दिल्ली 1997

6 शर्मा, श्रीराम आचार्य - शिक्षा एवं विद्या, अखण्ड ज्योती संस्थान मथुरा, 1998

7 सिंह, मनोज कुमार - शिक्षा और समाज, आदित्य पब्लिशर्स, बीमा मध्य प्रदेश 1998

8 पाण्डे, गोविन्दचन्द्र - "मूल्य मीमांसा", राजस्थान हिन्दी जयपुर 1973

Corresponding Author

Dr. S. K. Mahto*

Principal, Thakur Durgpal Singh Memorial B.Ed. College, RRBM University, Alwar, Rajasthan